ट्रेड यूनियनें और क्रांति

संयुक्त राज्य अमेरिका का ट्रेड यूनियन आंदोलन-II

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की दुनिया में संयुक्त राज्य अमेरिका

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका ज्यादा ताकतवर होकर उभरा था। इसकी सैन्य और आर्थिक शक्ति और ज्यादा मजबूत हो गयी थी। 1946 में इसका हिस्सा समूची पूंजीवादी दुनिया के उत्पाद का 50 फीसदी से ज्यादा था। दूसरी तमाम साम्राज्यवादी शक्तियों से वरीयता प्राप्त संयुक्त राज्य अमेरिका समूची पूंजीवादी दुनिया पर अपनी इच्छा थोप सकने की स्थिति में था। संयुक्त राज्य अमेरिका के शासक वर्ग अपनी इस हैसियत के लिए लम्बे समय से संघर्ष कर रहे थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के पहले ही संयुक्त राज्य अमेरिका कम्युनिज्म विरोध का मजबूत दुर्ग बना हुआ था। यह इसलिए भी था कि पूंजीवाद के विरोध में वहां कोई मजबूत वामपंथी विकल्प नहीं था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शुरुआती वर्षों में यूरोप के साम्राज्यवादी देशों, विशेष तौर पर ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के शासक वर्गों द्वारा अमरीकी साम्राज्यवाद के कम्युनिज्म विरोध को प्रोत्साहित किया गया। इसका कारण खुद यूरोपीय शासक वर्गों के पूंजीवादी स्वार्थ और विशेष तौर पर उपनिवेशों में उनकी हैसियत को कायम रखना था इसके लिए वे उपनिवेशों में कम्युनिज्म की घुसपैठ से लड़ने का तर्क देते थे।

जिस तरीके से द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हुआ था उसने अंतर साम्राज्यवादी अंतर्विरोध को पृष्ठभूमि में धकेल दिया था। इसने सभी साम्राज्यवादी देशों के शासक वर्गों को अपने खुद के वर्ग स्वार्थों की रक्षा करने के लिए केन्द्रित कर दिया था। उन्हें वस्तुगत तौर पर निम्नलिखित कार्यभारों का मुकाबला करना था :

(1) समाजवाद, जिसका प्रभाव और राजनीतिक प्राधिकार उस समय तक बहुत ज्यादा बढ़ गया था, को रोकने के व्यवहारिक तरीके निकालना।

(2) पूंजीवादी देशों के मजदूर वर्ग और तमाम जनवादी शक्तियों द्वारा हासिल की गयी सफलताओं को निष्प्रभावी बनाना और उन्हें पीछे ले जाना।

(3) औपनिवेशिक व्यवस्था को ध्वस्त होने से बचाना।

(4) द्वितीय विश्वयुद्ध के आर्थिक, राजनीतिक और अन्य परिणामों से सबसे गहराई से प्रभावित पूंजीवादी व्यवस्था के अभिन्न हिस्सों को मजबूत करना।

इन कार्यभारों को पूरा करने के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों ने ट्रूमैन सिद्धान्त, मार्शल प्लान और विभिन्न फौजी गुटों-नाटो, सेण्टो और सीटो-की योजनायें लागू करना शुरू कर दिया। इन सब योजनाओं को लागू करने के बावजूद अमेरिकी साम्राज्यवादियों की अगुवाई में साम्राज्यवादी ताकतें केन्द्रीय व दक्षिण पूर्व यूरोप के देशों में जनता की जनवादी क्रांतियों की विजय रोकने में असफल हुईं। वे चीन और अन्य देशों में राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों के विजय अभियान रोकने में असमर्थ सिद्ध हुए।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भी संयुक्त राज्य अमेरिका का उत्पादन तंत्र बखूबी बरकरार था। उसने युद्ध की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली उत्पादन प्रणाली के एक हिस्से को जल्द ही अन्य तरह के उद्योगों में स्थानांतरित कर दिया। पुराने संयंत्रों का स्थान आधुनिक संयंत्र लेने लगे। इस अनुकूल आर्थिक पृष्ठभूमि में मजदूर वर्ग के संघर्ष बढ़ने लगे। 1945 -46 का काल बड़े पैमाने के मजदूर वर्ग संघर्षों का काल था। मालिकों द्वारा मजदूर-विरोधी और ट्रेड यूनियन विरोधी नीतियां अपनाने के साथ-साथ कीमतों पर सरकारी नियंत्रण कमजोर होने और बाद में समाप्त करने के कारण मजदूर हड़तालों का सिलसिला शुरू हो गया। युद्ध के पहले और युद्ध के दौरान ट्रेड यूनियनों की सदस्यता बढ़ गयी थी और वे सांगठनिक तौर पर मजबूत हो गयी थीं। 1945 में आधिकारिक तौर पर ट्रेड यूनियनों के सामूहिक सौदेबाजी के अधिकार को मान्यता दे दी गयी थी। ट्रेड यूनियनों ने सट्टेबाजी और मुद्रास्फीति को रोकने के लिए कदम उठाने की मांग की। उन्होंने मजदूरी बढ़ाने पर लगी रोक के विरुद्ध आवाज उठायी और वे अपनी मांगों पर दृढ़तापूर्वक डटे रहने के लिए तैयार हो गयीं।

मूलभूत उद्योगों से शुरू हुआ बेहतर मजदूरी के लिए अभियान समूचे देश को अपने आगोश में ले चुका था। अकेले 1946 में 46 लाख मजदूरों ने हड़ताल में हिस्सा लिया और 11 करोड़ 60 लाख कार्य दिवस का नुकसान हुआ। इन हड़तालों के परिणाम स्वरूप मजदूरी में काफी बढ़ोत्तरी हुई। तब भी, अपने तमाम जन-चरित्र के बावजूद ये हड़तालें आर्थिक मांगों तक सीमित थीं। यह संयुक्त राज्य अमेरिका के ट्रेड यूनियन आंदोलन के, विशेष तौर पर द्वितीय विश्व युद्धोत्तर काल के दौरान अर्थवादी चरित्र को दर्शाता है।

हालांकि संयुक्त राज्य अमेरिका के ट्रेड यूनियन आंदोलन की हैसियत आर्थिक संघर्षों के दौरान और मजबूत हो गयी थी तथापि राजनीतिक दृष्टिकोण या तो खालिस पूंजीवादी था या अस्पष्ट था। युद्ध के दौरान "राष्ट्रीय एकता" का नारा, जिसे एकाधिकारी पूंजीपति वर्ग ने सूत्रित किया था, मजदूर आंदोलन के नेताओं के बीच काफी लोकप्रिय बना रहा।

युद्धोत्तर काल में राष्ट्रीय एकता के नारे का इस्तेमाल कम्युनिस्टों और अन्य प्रगतिशील शक्तियों के विरोध में किया गया। अमेरिकी साम्राज्यवादियों की आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का मुकाबला करने के लिए मजदूर वर्ग की कोई जनाधार वाली राजनीतिक पार्टी नहीं थी। खुद ट्रेड यूनियन आंदोलन और इसके फेडरेशनों -ए.एफ.एल. और सी.आई.ओ.-का नेतृत्व पूंजीवादी विचारधारा से ग्रस्त था।

जैसा कि पहली किस्त के अंत में कहा जा चुका है कि 1944 में ब्राउडर ने कम्युनिस्ट पार्टी को भंग कर दिया था और एक ढीला-ढाला रूप कम्युनिस्ट राजनीतिक एसोसियेशन के नाम से दे दिया था। उस समय, ब्राउडर की विसर्जनवादी कार्यदिशा का विरोध करने वाली कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर ऐसी कोई पर्याप्त शक्ति नहीं थी जो सैद्धान्तिक तौर पर गलत और राजनीतिक तौर पर खतरनाक इस अवस्थिति का पुरजोर तरीके से विरोध करके इसे परास्त कर सके। ब्राउडरवाद ने जो अंततोगत्वा पतित होकर अमरीकी साम्राज्यवाद का खुला पैरोकार बन गया था, संयुक्त राज्य अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी को बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाया। कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता गिर कर कम हो गयी और ट्रेड यूनियनों में कम्युनिस्टों की हैसियत और प्रभाव काफी कम हो गया। बाद में 1945 में कम्युनिस्ट पार्टी को फिर से गठित करने का निर्णय लिया गया।

मैकार्थी काल और यूनियन विरोधी टाफ्ट-हार्टले अधिनियम

युद्ध सामानों की आपूर्ति से मोटे हो गये एकाधिकारी पूंजीपति वर्ग के हितों की सेवा में लगे घोर दक्षिणपंथी तत्वों ने "न्यू डील" को समाप्त करने की मांग शुरू कर दी थी। 1946 के अंत और 1947 की शुरुआत में यूनियन विरोधी अभियान अपने चरम पर पहुंच गया था। युद्धोत्तर काल के अनुदारमना पूंजीवादी बुद्धिजीवी इस आम राय के हो गये थे कि राज्य के श्रम नियमन के मौजूदा तरीके मजदूर संगठनों को उनके द्वारा की गयी कार्रवाइयों पर किसी भी तरह की उनकी जिम्मेदारी से मुक्त कर देते हैं।

1945-47 का काल, संयुक्त राज्य अमेरिका की कांग्रेस के भीतर प्रतिक्रिया- वादी श्रम कानूनों को तैयार करने में जोरशोर की गतिविधियों का रहा है। 1946 में रिपब्लिकन पार्टी का कांग्रेस के दोनों सदनों में बहुमत हो गया था। जून 1947 में टाफ्ट-हार्टले अधिनियम पारित किया गया। यह पूर्णतया यूनियन-विरोधी था।

टाफ्ट-हार्टले अधिनियम इस सिद्धान्त पर आधारित था कि श्रम सम्बन्धों को सीधे राज्य नियमन में होना चाहिए। यह ट्रेड यूनियनों को समाहित करने के अभियान को प्रतिबिंबित करता था यानी कि यह उनकी स्वतंत्रता को समाप्त करने का लक्ष्य रखता था। यह ट्रेड यूनियनों को एकाधिकारियों के नियंत्रण वाले राज्य के 'एक विभाग' में तब्दील कर देता था। यह उन्हें सरकार के निर्देशों पर काम करने को बाध्य करता था और इन निर्देशों के प्रत्येक छोटे से छोटे उल्लंघन के लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराता था। इस नये कानून के लेखकों ने इस मकसद को हासिल करने के लिए दो तरीके अपनाये। एक तरफ, यूनियन गतिविधियों को सामूहिक सौदेबाजी से लेकर पेंशन फण्ड की स्थापना तक, कड़ाई के साथ नियमित किया गया। दूसरी तरफ, नियोक्ताओं और यूनियनों के बीच सम्बन्धों के सभी पहलुओं को विशेष प्रशासनिक निकायों के रोज-ब-रोज नियंत्रण में ले आया गया।

टाफ्ट-हार्टले अधिनियम के अंतर्गत "अनुचित श्रम आचरण" (unfair labour practice) के दायरे में, जो पहले बैगनर अधिनियम के अंतर्गत सिर्फ नियोक्ताओं पर लागू होता था, यूनियनों को भी ले आया गया। यूनियन की इन कुछ किस्म की गतिविधियों को अनुचित आचरण माना गया : सामूहिक सौदेबाजी में हिस्सा लेने से इंकार करना, 'क्लोज्ड शॉप' (closed shop) की मांग शामिल करना [क्लोज्ड शॉप सामूहिक सौदेबाजी में एक ऐसा प्रावधान है जिसमें नियोक्ता को सम्बन्धित यूनियन के सदस्यों को ही काम पर रखने के लिए बाध्य होना पड़ता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में इस प्रावधान का लागू होना किसी उद्यम में ट्रेड यूनियन अधिकारों की सर्वाधिक विश्वसनीय गारण्टी थी], गौण बहिष्कार का संगठन, संविदा का उल्लंघन करके हड़तालों में हिस्सेदारी, प्रवेश की असामान्यता उच्च फीस की वसूली इत्यादि। इस अधिनियम ने अमरीकी मजदूरों के हड़ताल करने के अधिकार को काफी हद तक सीमित कर दिया था। नागरिक कर्मचारियों की हड़ताल पर पूर्ण पाबंदी लगा दी गयी। यदि कोई हड़ताल "राष्ट्रीय हितों के लिए खतरा" उत्पन्न करती हो तो संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति को ऐसी हड़ताल पर 80 दिन तक प्रतिबंध लगाने का अधिकार दे दिया गया। यदि यूनियनें उक्त अधिनियम के किसी प्रावधान का उल्लंघन करके हड़ताल का आह्वान करती हैं तो वे नियोक्ताओं के "अनुचित श्रम आचरण" के विरुद्ध बचाव करने के सभी अधिकार खो देंगी और इसके लिए उन्हें सजा भी मिल सकती है।

राज्य ने यूनियनों के राजनीतिक संघर्षों की सीमायें तय कर दीं और अमेरीकी मजदूर संगठनों की "शुद्धता" को सुनिश्चित करने के लिए ट्रेड यूनियन नेताओं से सालाना हस्ताक्षर सहित इस बयान की मांग की गयी कि वे संयुक्त राज्य अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी की गतिविधियों में हिस्सा नहीं लेते।

टाफ्ट-हार्टले अधिनियम ने विभिन्न राज्यों को यूनियन-विरोधी कानून बनाने के लिए प्रेरित किया। 1947 के सितम्बर तक अमरिकी श्रम विभाग के अनुसार, 14 राज्यों द्वारा तथाकथित काम के अधिकार के अधिनियमों को पारित किया गया जिसमें क्लोज्ड शॉप व यूनियन शॉप समझौतों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। यह कोई अकारण नहीं है कि अमेरीकी मजदूरों ने टाफ्ट-हार्टले अधिनियम का दूसरा नाम "गुलाम मजदूर चार्टर" दे दिया था।

मजदूर संगठनों के आंतरिक मामलों में संघीय अधिकारियों की दखलंदाजी के साथ ही कम्युनिस्टों, उदारवादियों और अन्य सभी प्रगतिशील तत्वों के विरुद्ध नागरिक और राजनीतिक भेदभाव की नीति बड़े पैमाने पर लागू की गयी। 50 के दशक के पूर्वार्द्ध में संयुक्त

राज्य अमेरिका को घोर दक्षिणपंथी एवं अंधराष्ट्रवादी जिस तूफान ने लपेट लिया था उसे "मैकार्थीवाद" कहा जाता है। जोसेफ मैकार्थी नामक रिपब्लिकन सीनेट सदस्य "देशद्रोही तत्वों" के विरुद्ध अभियान चलाने वालों का मुखिया था। मैकार्थीवाद ने दमन, यातना और ढूंढ़-ढूंढ़ कर विरोधियों का शिकार करने का जो सिलसिला चलाया उसने अमेरिकी जीवन को प्रदूषित कर दिया तथा अमेरिकी अधिकारों के बिल की भावना व अंतर्वस्तु का तेजी से क्षरण कर दिया। वैसे इस दमनकारी नीति की शुरुआत राष्ट्रपति ट्रूमैन ने मार्च, 1947 में कर दी थी। ट्रूमैन की "वफादारी की जांच करने" की इस नीति के तहत जो व्यक्ति दक्षिणपंथी शक्तियों को नापसंद था उसे सरकारी ओहदों से हटा दिया गया था।

1948 की गर्मियों में, 100 से ज्यादा वामपंथी लोगों पर, जिनमें कम्युनिस्ट पार्टी के 12 नेता थे, मुकदमा चलाया गया। कोरिया पर अमेरिकी साम्राज्यवादियों द्वारा हमले के समय मजदूर-विरोधी कानूनों की पूरी श्रृंखला लागू की गयी जिसमें 1950 का मैककैरेन-वुड आंतरिक सुरक्षा अधिनियम एक था। इसके तहत देशद्रोहात्मक गतिविधियों के नियंत्रण बोर्ड (Subversive activities control Board) की स्थापना की गयी। इस बोर्ड की जिम्मेदारी "कम्युनिस्ट गतिविधि" की पूरी जांच-पड़ताल करना था और "कम्युनिस्ट फ्रन्ट" संगठनों को खोज निकालना तथा उनके विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए मुकदमा दर्ज करना था। मैककैरेन-वुड सुरक्षा अधिनियम के प्रावधान के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति या कोई संगठन "कम्युनिस्ट फ्रन्ट" का सदस्य है और कानून विभाग में अपने को पंजीकृत करने से इंकार करता है तो उस पर 10 हजार डॉलर का जुर्माना या पांच वर्ष की सजा या दोनों साथ दिया जा सकता था।

अगस्त, 1954 में मैककैरेन-वुड कानून में संशोधन करके उसे कम्युनिस्ट नियंत्रण अधिनियम का नाम दे दिया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया और अमेरिकी कानूनों के आधार पर बने संगठनों को आमतौर पर मिले अधिकारों, सुविधाओं और सुरक्षा से वंचित कर दिया गया।

सीनेट सदस्य जोसेफ मैकार्थी द्वारा खड़े किये गये कम्युनिस्ट विरोधी मुहिम के संदर्भ में या विभिन्न मत रखने वालों के विरुद्ध मुकदमा व प्रताड़ना के चलते कुछ कम्युनिस्ट भूमिगत हो जाने को विवश हुए। इसने भी कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य प्रगतिशील संगठनों को कमजोर किया तथा ट्रेड यूनियन गतिविधियों विशेषतौर पर इसके वामपक्ष की गतिविधियों को बाधित किया। अधिकांश ट्रेड यूनियन नेता पीछे हट गये और सरकारी दबाव में आ गये। इससे ट्रेड यूनियन गतिविधियों में ठहराव आ गया तथा उसमें आगे नुकसान होता रहा। 80 हजार से अधिक यूनियन पदाधिकारियों ने कम्युनिस्ट पार्टी में न शामिल होने सम्बन्धी टाफ्ट-हार्टले अधिनियम को पूरा करते हुए अपना हलफनामा दिया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ट्रेड यूनियन नेता टाफ्ट हार्टले अधिनियम से कितना भयाक्रांत होकर उसे महत्व देते थे। यह एक महत्वपूर्ण कारण था जो उन्हें इस अधिनियम को वापस लेने की मांग करने के लिए आंदोलन करने से रोकता था।

मजदूर आंदोलन की राजनीतिक कमजोरी के चलते संयुक्त राज्य अमेरिका में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के काल में प्रतिक्रियावाद की विजय सुगम हो गयी। अमेरिकी मजदूर वर्ग मजदूर विरोधी कानून के विरुद्ध संगठित विरोध करने में असफल सिद्ध हुआ। परिणाम स्वरूप प्रतिक्रियावादी टाफ्ट-हार्टले अधिनियम उस पर थोपने में सफल हो गये। इसका अर्थ अमेरिकी मेहनतकश जन समुदाय के लिए बड़ा धक्का था।

टाफ्ट-हार्टले अधिनियम के लागू होने के शुरुआती दिनों से ही ए.एफ.एल. और सी.आई.ओ. के नेताओं ने इसका विरोध कार्रवाई के महज संसदीय रूप तक सीमित कर रखा था। वे इसका जमीनी स्तर पर कोई विरोध नहीं कर रहे थे। उन्होंने उन संसद सदस्यों के विरुद्ध अभियान चलाया जिन्होंने उक्त अधिनियम के पक्ष में मतदान किया था। इसी के साथ ही, दक्षिणपंथी यूनियन नेताओं ने कम्युनिस्ट विरोधी अभियान में बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी की और समाजवादी देशों के विरुद्ध शीत युद्ध का प्रचार किया। ये वही नेता थे जो द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर काल के शुरुआती दिनों में "वर्ग शांति" और "राष्ट्रीय हितों के समुदाय" की हिमायत करते थे। परिणाम स्वरूप, सी.आई.ओ. जो युद्ध से पहले मजदूरों के संघर्ष में हिरावल की भूमिका में था, वह दक्षिणपंथ के मजबूत होने के साथ कम्युनिस्ट विरोधी अभियान में शामिल हो गया। 1948 में, सी.आई.ओ. के नेता फिलिप मरी ने घोषणा की कि सी.आई.ओ. के भीतर कम्युनिस्टों के लिए कोई स्थान नहीं है। 1946-49 के दौरान सी.आई.ओ. का नेतृत्व इस संगठन से उन बड़ी ट्रेड यूनियनों को निष्कासित करने में सफल हो गया जिनके नेता वामपंथी विचार रखते थे।

अमरीकी मजदूर वर्ग पर पूंजीपति वर्ग को अपना विचारधारात्मक और राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करने में मदद देकर, ए.एफ.एल. और सी.आई.ओ. के दक्षिणपंथियों ने अपने संगठन को नियोक्ताओं के विरुद्ध शुद्धतः आर्थिक संघर्षों में, भौतिक रियायतों के लिए संघर्ष मे ही लगा दिया। इससे ट्रेड यूनियनों की सदस्यता बढ़ी। उनकी सांगठनिक शक्ति बढ़ी। उनके पास हड़ताल फण्ड में काफी बढ़ोत्तरी हुई। इससे वे लगातार संघर्षों में लगे रहने तथा नियोक्ताओं के हमलों का प्रतिरोध करने में समर्थ हुए। अकेले 1949 में हड़तालों से होने वाले कार्यदिवसों की नुकसान की संख्या 5 करोड़ 5 लाख थी जो 1952 में 5 करोड़ 81 लाख तक पहुंच गयी। **(Statistical Abstract of the United States, 1954, P.228)**

सभी बड़े संगठनों में केवल खदान मजदूर यूनियन और छापाखाने के मजदूर यूनियन ही ऐसी यूनियनें थीं जिन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी से असम्बद्ध होने का बयान देने से इंकार कर दिया था। 1948-49 में इन यूनियनों ने रेलरोड ब्रदरहुड यूनियनों के साथ मिलकर टाफ्ट-हार्टले अधिनियम के मुख्य प्रावधानों के विरुद्ध बड़े पैमाने पर हड़तालों की श्रृंखला संगठित की। विशेषतौर पर इनका विरोध "क्लोज्ड शाप" पर लगे प्रतिबंध पर था। इन हड़तालों से नये श्रम कानूनों की मजदूर विरोधी दिशा और उनके मजदूर विरोधी सारतत्व का पता चलता है। इन ट्रेड यूनियनों की ताकत इस बात में निहित थी कि ये अपने ट्रेड या उद्योग के लगभग सभी मजदूरों को

एकताबद्ध करने में सफल हुऐ थे। लेकिन नियोक्ताओं के पास सुगठित राज्य मशीनरी होने के चलते इनकी इतनी ताकत के बल पर टाफ्ट-हार्टले अधिनियम को निरस्त नहीं कराया जा सकता था।

ऐसे ही समय में, 1955 में ए.एफ.एल. और सी.आई.ओ. का विलय हो गया। अब अधिकांश ट्रेड यूनियनें एक ही फेडरेशन ए. एफ.एल.-सी.आई.ओ. में एकजुट हो गयी थीं। अब इनकी सदस्य संख्या एक करोड़ साठ लाख हो गयी थी। यह ताकत अब इस फेडरेशन को समर्थ बनाती थी कि वह ट्रेड यूनियन संगठनों के अधिकारों और मजदूरों की मांगों को पूरा कराने में और ज्यादा कारगर हो। इसी के साथ ही, यह तथ्य कि इन दोनों संगठनों का विलय मुख्यतया ए.एफ.एल. की शर्तों के तहत हुआ था, इससे संयुक्त राज्य अमेरिका के ट्रेड यूनियन आंदोलन में दक्षिणपंथी सुधारवादी रुझान और ज्यादा मजबूत हो गया।

कम्युनिस्टों को अलग-थलग करने के लिए प्रताड़ना, धरपकड़ और कुत्सा प्रचार अभियान को देखते हुए कम्युनिस्ट पार्टी का काम करना मुश्किल होने के बावजूद वह मजदूरों के राजनीतिक संघर्ष का परचम अपने हाथों में उठाये हुए थी। कम्युनिस्ट पार्टी और वामपंथी ट्रेड यूनियनों को सी.आई.ओ.से निष्कासित कर दिया गया था। लेकिन मैकार्थीवाद के विरुद्ध संघर्ष के इतिहास में इन्होंने कई शानदार पृष्ठ लिखे। इसके बावजूद, कम्युनिस्ट पार्टी और वामपंथी ट्रेड यूनियनों की इतनी ताकत नहीं थी कि वे मैकार्थीवाद के विरुद्ध व्यापक मजदूरों को एकजुट करके उसका सशक्त प्रतिवाद कर सकें।

इसके अतिरिक्त, कम्युनिस्ट पार्टी ब्राउडरवाद से मुक्ति पाने में भी असफल रही थी। वह खुद सुधारवाद के दलदल में फंसी हुई थी। इसका पता इससे चल जाता है कि जैसे ही ख्रुश्चेव ने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस में संशोधनवादी कार्यदिशा पेश की, वैसे ही संयुक्त राज्य अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने उसे स्वीकार कर लिया।

इस सबके बावजूद संयुक्त राज्य अमेरिका का मजदूर आंदोलन 50 के दशक में मजबूत स्थिति में था। हालांकि वह अर्थवाद के दायरे में ही था। 50 के दशक में इसकी सालाना आमदनी 50 करोड़ डॉलर की थी और इतना ही इसका कोष स्थानीय और जिला इकाइयों का था। उस समय मजदूरों के 650 साप्ताहिक और 250 मासिक अखबार निकलते थे। 1950 के दशक में इसके पास 15000 पूरा वक्ती राष्ट्रीय पदाधिकारी, संगठनकर्ता और तकनीकी स्टाफ था। इसके अतिरिक्त स्थानीय पैमाने पर हजारों लोग थे। इसके पास लाखों-लाख डॉलर की इमारतें और कार्यालय स्थल थे। मानव शक्ति संसाधनों और नौकरशाही मशीनरी के मामले में अमरीका की ट्रेड यूनियनें दुनिया की सबसे ताकतवर यूनियनें थीं। हां, यह भी सही है कि इसका मुकाबला दुनिया के सबसे ताकतवर विरोधी से था। 1956 में यूनियनों की सदस्य संख्या 1 करोड़ 75 लाख थी। (ये तथ्य अमेरिकन सोशलिस्ट पत्रिका के जुलाई-अगस्त, 1958 के अंक से लिए गये हैं)

50 के दशक में, यूनियनों का नौकरशाही ढांचा पहले से बहुत बड़ा हो गया था। पुराने ए.एफ.एल. के दौरान मजदूर यूनियनें अपने सदस्यों की मजदूरी सामान्य स्तर से ऊपर बढ़ाने में आमतौर पर समर्थ होती थीं, लेकिन उनकी मजदूरी की दरें समूचे देश के पैमाने पर कोई छाप नहीं छोड़ती थीं। जबकि 50 के दशक में यूनियनें कार्यशक्ति का इतना बड़ा हिस्सा हो गयी थीं, देश के कुछ बुनियादी उद्योगों में तो 100 प्रतिशत मजदूर यूनियनीकृत हो गये थे, कि मजदूरी के मामले में कोई बड़ा समझौता एक या दूसरे अंश में समूचे कारोबारी समुदाय के लिए एक उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल होने लगा था। राजनीतिक क्षेत्र में, "अपने दोस्तों को पुरस्कृत करो और अपने दुश्मनों को सजा दो" की नीति उस समय तक गुणात्मक रूप से भिन्न स्तर पर अपनायी जाने लगी थी। यूनियनों ने स्थानीय पैमाने पर कार्रवाई कमेटियां, डेमोक्रेटिक पार्टी के भीतर कई औद्योगिक केन्द्रों में अपनी बढ़ी हुई हैसियत और शहर, राज्य और संघीय स्तरों पर उदार राजनीतिक हस्तियों के साथ गठजोड़ कायम कर लिए थे।

ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. नेतृत्व का पूंजीवादीकरण इस कदर हो चुका था कि वे 50 के दशक के ज्वलंत मुद्दों यथा युद्ध और शांति, हाइड्रोजन बम, आणविक परीक्षण, औपनिवेशिक आजादी इत्यादि पर आमतौर पर अमरीकी शासक वर्ग का ही रवैय्या अपनाते थे। वे पूंजीपति वर्ग की तरह ही भ्रष्टाचार में लिप्त हो गये थे। जैसे कोई नियोक्ता निरीक्षकों को खरीदकर अपना काम निकालता है वैसे ही मजदूर प्रतिनिधि भी नियोक्ताओं से समझौता करके प्रबंधन के एक अंग के बतौर काम करते थे। मजदूर उनको बॉस कह कर पुकारते थे। वे अपनी उत्पत्ति को भूलकर प्रबन्धन की समस्याओं से अतिरिक्त सरोकार रखते थे। अमेरिकी मजदूर आंदोलन लम्बे समय से शोषक वर्ग के शोषण और भ्रष्टाचार को प्रतिबिम्बित कर रहा था। ट्रेड यूनियनवाद जिस हद तक पूंजीपति वर्ग के आचरण को अपना रहा था, उस हद तक यह मजदूरों के सही प्रतिनिधि होने का कारण खोता जा रहा था। ट्रेड यूनियनों के बीच व्याप्त भ्रष्टाचार को मैक्लेनन ने उजागर किया था। मजदूर आंदोलन की नैतिक स्थिति कमजोर होती जा रही थी। और वह अपनी संगठन शक्ति का इस्तेमाल मजदूर आबादी के क्रांतिकारी रूपान्तरण के लिए तो नहीं ही कर रहा था, बल्कि आम मजदूरों को वह निष्क्रिय रखता था और उनको सिर्फ आह्वान के समय ही याद किया जाता था। यही कारण है कि एक समय यानी 1948 में एक पूंजीवादी समाजशास्त्री ने मजदूर नेताओं को "शक्ति के नये मानव" कहा था, उसी ने 1956 में यह कहा :

> "थोड़े समय के लिए ऐसा लगता था कि निगम और राज्य से स्वतंत्र मजदूर एक शक्ति का केन्द्र होंगे जो उन पर और उनके विरुद्ध काम करेंगे। सरकार तंत्र पर निर्भर हो जाने के बाद मजदूर यूनियनों की शक्ति में तेजी से गिरावट आयी है और इस समय बड़े राष्ट्रीय फैसलों में उनकी थोड़ी ही भूमिका है। संयुक्त राज्य के पास ऐसा कोई मजदूर नेता नहीं है जो बाहरी राजनीतिक व्यक्ति को दिखाई पड़ने वाले सरकारी फैसलों में कुछ भी महत्व का वजन रखता हो। ... ... हां शीर्ष परिषदों के नीचे, वे सत्ता के मध्यम स्तर पर हैं।" (सी. राइट मिल्स, दी पावर इलीट, न्यूयार्क, 1956, P-762-63, अनुवाद हमारा, अमेरिकन सोशलिस्ट जुलाई-अगस्त 1958 से उद्धृत)

इसका परिणाम यह निकला कि पचास के दशक का अंत आते-आते मजदूर वर्ग तीस के दशक जैसी सामाजिक हैसियत में पहुंच गया था। जहां यूनियन संगठन अपने को नौकरशाही आधारों पर सुदृढ़ कर चुके थे वहीं इनका जोश और चमक जा चुकी थी और कतारों के नजरिये में कूपमण्डूकता बढ़ती जा रही थी।

पचास के दशक के अंत में, 1959 में अमेरीका के स्टील उद्योग की हड़ताल अभूतपूर्व थी। यह हड़ताल 116 दिनों तक चली। इसमें 5 लाख 40 हजार मजदूरों ने हिस्सा लिया। यू.एस. स्टील ने मजदूरी में कटौती और मजदूरों की संख्या में कमी करने के साथ-साथ काम के और कठोर नियम निकाले। यूनाइटेड स्टील वर्कर्स ने तय कर लिया था कि वे इन नये नियमों को कत्तई स्वीकार नहीं करेंगे। राष्ट्रपति आइजनहावर के हस्तक्षेप से समझौता हो सका। यह वह अंतिम हड़ताल थी जिसके बाद अमेरीका का बड़ा स्टील उद्योग गिरावट की और गया और 1980 के दशक तक वहां के स्टील संयंत्र बंद होने लगे।

60 के दशक का नागरिक अधिकार आंदोलन और मजदूर संघर्ष

1960 के दशक में नये मजदूर औद्योगिक केन्द्रों में आ रहे थे। यह वह दशक था जब अमेरीका वियतनाम युद्ध में अपनी सैन्य शक्ति झोंक रहा था। खुद अमेरिका के अंदर अफ्रीकी-अमेरिकी लोगों के साथ होने वाले भेदभाव के विरुद्ध आंदोलन जिसे नागरिक अधिकार आंदोलन (Civil Right Movement) कहा जाता है, तेज हो गया था। 1960 के दशक में कुशल मजदूरों ने यूनियन नेतृत्व के लिए परेशानी पैदा करना शुरू कर दिया था। ये कुशल मजदूर यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स और यूनाइटेड स्टील वर्कर्स से थे। ये केन्द्रीय नेतृत्व द्वारा सामूहिक समझौते में दस्तखत किये जाने को मानने से इंकार कर रहे थे। वे अपनी मजदूरी बढ़ाने तथा अपने विशेषाधिकारों की हिफाजत के लिए हड़ताल पर चले गये। इसके बाद वियतनाम युद्ध के घनीभूत हो जाने, नागरिक अधिकार आंदोलन के बढ़ने, और काले लोगों के सक्रिय हो जाने से जुझारू मजदूरों की नयी पीढ़ी आ गयी थी जो सी.आई.ओ. के दिनों जैसा या सामाजिक सुधारों के लिए इसके द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर लड़ाइयों जैसा कुछ नहीं करना चाहती थी।

1960 के दशक की दो ज्यादा चर्चित हड़तालें ऐसी थीं जो मजदूरों के अधिकारों और नागरिक अधिकारों के बीच सम्बन्धों को दिखाती हैं। 1965 में राष्ट्रीय फार्म मजदूर संगठन [एन.एफ.डब्ल्यू.ओ. जो बाद में यूनाइटेड फार्म वर्कर्स (यू.एफ.डब्ल्यू.) हो गया] ने कैलीफोर्निया प्रांत के प्रवासी अंगूर तोड़ने वाले मजदूरों की पांच वर्षीय हड़ताल का नेतृत्व किया था। इस हड़ताल ने खतरनाक काम के हालात के मुद्दों को उठाया। इसने मैक्सिकोवासी, फिलिपिनो, प्रवासी मजदूरों और मैक्सिको अमेरिकी मजदूरों के साथ मजदूरी में किये जाने वाले भेदभाव के मुद्दे को उठाया। यह लड़ाई मजदूरी के साथ-साथ सम्मान की लड़ाई थी। कई मौकों पर इस यूनियन के नेता सेसार चावेज ने प्रवासी मजदूरों के मुद्दों, अंगूरों पर कीटनाशक दवाओं के उपयोग के विरुद्ध और बाहरी हड़ताल तोड़कों को गैर कानूनी तौर पर रोजगार देने के विरुद्ध ध्यान दिलाने के लिए अनशन किया। इस हड़ताल के साथ ही कैलीफोर्निया के अंगूरों का राष्ट्रीय पैमाने पर बहिष्कार का आह्वान किया गया। यह आह्वान सफल हुआ। यू.एफ.डब्ल्यू बहिष्कार का आह्वान इसलिए भी कर सका क्योंकि फार्म मजदूर टाफ्ट-हार्टले अधिनियम के लागू होने के दायरे से बाहर थे। इस हड़ताल के दौरान अंगूर तोड़ने वालों का 350 मील लम्बा मार्च निकाला गया। रास्ते में इन मजदूरों को व्यापक समर्थन मिला। इस अभियान का समापन 1970 में हुआ। उस समय यू.एफ.डब्ल्यू. के साथ मालिकों का समझौता हुआ और यह हड़ताल सफल हुई।

इसी प्रकार मेक्फिस के सफाई मजदूरों की 1968 में हुई हड़ताल थी जो मजदूरों के अधिकारों और नागरिक अधिकारों के बीच सम्बन्ध को दर्शाती है। मेक्फिस के ज्यादातर सफाई मजदूर अफ्रीकी-अमेरिकी थे जब कि उनके सभी सुपरवाइजर गोरे थे। ये मजदूर गरीबी रेखा के नीचे के स्तर पर रहते थे और भयावह खतरनाक माहौल में काम करते थे। दो काले मजदूरों की काम के समय दुर्घटना में मौत के तात्कालिक कारण से यह हड़ताल शुरू हुई। इस हड़ताल ने भी तरह-तरह के दांवपेंच अपनाये। मार्टिन लूथर किंग ने इस हड़ताल का समर्थन किया था। किंग ने इसके समर्थन में 18 मार्च 1968 को भाषण दिया और 29 मार्च को उन्होंने मेक्फिस में मार्च का नेतृत्व किया। वे तीसरी बार हड़ताल का समर्थन करने के लिए मेक्फिस पहुंचे और न्यायालय के प्रतिबंध के बावजूद उन्होंने हड़तालियों की रैली को सम्बोधित किया। इसके अगले ही दिन मार्टिन लूथर किंग की हत्या हो गयी। किंग की हत्या के बाद समूचे संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़े पैमाने पर दंगे शुरू हो गये। इन दंगों से वह पृष्ठभूमि तैयार हुई जिन्होंने काले मजदूरों के कार्यस्थल पर असंतोष को व्यक्त करने वाली शहरों में गैर कानूनी हड़तालों का सिलसिला शुरू कर दिया। ये नीचे की कतारों द्वारा शुरू की गयी हड़तालें थीं। ये गैर कानूनी इसलिए थीं क्योंकि ये यूनियन नेतृत्व की बिना इजाजत के अचानक हो जाती थीं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के मजदूर आंदोलन पर प्रभुत्व ट्रेड यूनियनवादियों का था। यहां के मजदूर आंदोलन में स्वतंत्र राजनीतिक कार्रवाई का अभाव था। चूंकि ट्रेड यूनियनवादी विचारधारा अंततोगत्वा पूंजीवादी विचारधारा ही होती है इसलिए अमेरिकी मजदूर वर्ग समाज में अपना उचित स्थान नहीं पा सका।

1970 के दशक में अमेरिकी शासक वर्ग खुद संकट में फंस गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का 'स्वर्णिम काल' अब समाप्ति पर था। अमरीकी शासक वर्ग की आक्रमणकारी नीति के चलते सामाजिक-राजनीतिक संकट गहरा गया था। अमेरिकी साम्राज्यवाद की वियतनाम युद्ध में पराजय, काले लोगों का मुक्ति संघर्ष और छात्र समुदाय का क्रांतिकारीकरण इस सामाजिक-राजनीतिक संकट को अभिव्यक्ति दे रहे थे।

यह परिस्थिति मजदूर आंदोलन के समक्ष नयी मांगें पेश कर रही थी। मजदूर वर्ग की एक स्वतंत्र राजनीतिक पार्टी का अभाव था। कम्युनिस्ट पार्टी के नाम पर एक संशोधनवादी पार्टी थी। एक सही मजदूर वर्ग की कम्युनिस्ट पार्टी इस परिस्थिति से पैदा हुई चुनौतियों को हल करने में अपनी भूमिका निभा सकती थी।

ट्रेड यूनियन आंदोलन का नेतृत्व, जो अमेरिकी शासक वर्ग की धुन पर नाच रहा था इसमें प्रमुख बाधा बना हुआ था। यही कारण था कि प्रगतिशील शक्तियों की जन राजनीतिक कार्रवाइयों का अमेरिकी मजदूर वर्ग नेतृत्व नहीं कर सका।

1960 के दशक के उत्तरार्द्ध और 1970 के पूर्वार्द्ध में अमेरिकी घरेलू राजनीति का एक महत्वपूर्ण तत्व युद्ध-विरोधी आंदोलन था। इस आंदोलन ने अमेरिकी शासक वर्ग को मजबूर कर दिया कि वह युद्ध समाप्त करने के लिए शांति वार्ताएं करे और फिर इसी युद्ध विरोधी आंदोलन ने उसे हिन्द-चीन से पूरी तरह से अपनी सेनायें हटाने के लिए बाध्य किया। इस युद्ध-विरोधी आंदोलन में मजदूर वर्ग का एक छोटा सा हिस्सा और कुछ प्रभावशाली यूनियनें ही सक्रिय तौर पर शामिल थीं। लेकिन जहां तक ए.एफ.एल-सी.आई.ओ. के नेतृत्व की बात है, वह पूर्णतया अमेरिकी शासक वर्ग की आक्रामक नीति के समर्थन में था। इसके इस प्रतिक्रियावादी नजरिये के चलते मजदूर वर्ग की आम हिस्सेदारी इस आंदोलन में नहीं हो सकी। मजदूर वर्ग के कुछ हिस्से उस समय उस मौन बहुमत (Silent Majority) के साथ हो गये थे जिन पर प्रगतिशील लोगों के धुर विरोधी और अनुदार राजनीतिज्ञ निर्भर करते थे। 1970 में न्यूयार्क के निर्माण मजदूरों ने हिन्द-चीन में अमेरिकी साम्राज्यवाद की आक्रमणकारी नीतियों के समर्थन में जूलूस निकाला था और युद्ध विरोधी आंदोलनकारी छात्रों की पिटाई की थी। ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. के नेतृत्व ने अमेरिकी शासक वर्ग द्वारा वियतनाम में किये जा रहे आक्रमणकारी कुकृत्यों का बिना शर्त समर्थन किया था। ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. का नेतृत्व दोनों महाशक्तियों-संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ-के बीच चल रही वार्ताओं में अपने शासक वर्ग के साथ बेशर्मी से खड़ा था।

कतारों के वाइल्ड कैट संघर्षों का सिलसिला

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि 1970 के दशक में नीचे की कतारों द्वारा गैर-कानूनी हड़तालों का सिलसिला फूट पड़ा था। इस काल की विशेषता यह थी कि हड़तालें बढ़ती जा रही थीं। इनमें हिस्सेदारी करने वालों की संख्या बढ़ रही थी और उनकी मांगों का दायरा बढ़ रहा था। इन सबके साथ कतारों के बीच प्रतिक्रियावादी यूनियन नौकरशाही का विरोध भी बढ़ता जा रहा था। प्रतिक्रियावादी यूनियन बॉस द्वारा श्रम विवादों को हल करने में अपनाये जा रहे समझौतावादी तरीकों का मजदूर अधिकाधिक विरोध कर रहे थे। वे बॉस लोगों की धीरे चलने वाली मांग को अधिकाधिक ठुकरा रहे थे और आंदोलन के भीतर और ज्यादा जनवाद की मांग कर रहे थे।

1970 के दशक की शुरुआत में कुछ यूनियनों के आम सदस्यों ने, जिसमें ट्रक ड्राइवर, रसायन और संचार के मजदूर, इत्यादि थे, ने यूनियन नेताओं को पहले किये गये सामूहिक समझौतों में संशोधन करने के लिए बाध्य कर दिया। 1970 के दशक में कर्मचारी नियमों की कम परवाह करते थे या उच्च अधिकारियों के सामने कम झुकते थे। उनमें से कइयों के लिए काम की सुरक्षा और पैसे के पुरस्कार की पारंपरिक प्रेरणा ओर निजी तौर पर आगे बढ़ने के अवसर अपर्याप्त सिद्ध हो रहे थे।

अब मजदूरों की नयी पीढ़ी आ गयी थी। इसी के साथ निचले स्तर के यूनियन करने वालों की सक्रियता बढ़ी थी। ये नयी पीढ़ी के मजदूर शिक्षा के स्तर के मामले में अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी के मजदूरों से भिन्न थे। हाईस्कूल या कॉलेज से निकले ये मजदूर पूंजीवादी उद्यम के भीतर काम की स्थिति के बारे में बहुत अस्पष्ट विचार रखते थे। वे पूंजीवादी उद्यम के भीतर काम करने की एकरसता, काम करने की अर्थहीनता, काम करने की प्रक्रिया में आजादी का अभाव और सृजनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति के असम्भव होने के बारे में बहुत कुछ अनजान थे। इन नये मजदूरों को काम के समय होने वाले बेगानेपन के एवज में मिलने वाली भौतिक सुविधायें और भी कम संतुष्ट करती थीं। काम के समय बेहतर गुणवत्ता वाले जीवन की धारणा से जुड़ी मांगे अधिकाधिक महत्वपूर्ण स्थान लेती जा रही थीं।

जनवरी, 1972 में लार्ड्सटाउन के जनरल मोटर्स के 10 हजार मजदूरों की हड़ताल नये मजदूरों के बढ़ते जुझारूपन की निश्चित तौर पर एक अभिव्यक्ति थी। 1970 के दशक में गैर कानूनी (वाइल्ड कैट) हड़तालों की अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी सर्वाधिक स्पष्टता से दिखाई पड़ती है। यह यूनियन नेतृत्व की समझौतावादी नीति के विरुद्ध आम सदस्यों की प्रतिक्रिया थी। ऐसी वाइल्ड कैट हड़तालें कोयला खदान उद्योग में सबसे ज्यादा हुईं। खनिकों के यूनियन के इतिहास में सबसे जनभागीदारी वाली वाइल्ड कैट हड़ताल 1977 के अंत और 1978 के शुरू में हुई, जब 16 सप्ताह के संघर्ष के बाद 1 लाख 60 हजार खनिकों ने मजदूरी में बड़ी बढ़ोत्तरी जीती और वाइल्ड कैट हड़तालों के विरुद्ध कड़े प्रतिबंधों को असफल कर दिया। यह जीत इस तथ्य के बावजूद हुई कि राष्ट्रपति ने हस्तक्षेप किया और खदानों के भीतर फौज को भेजने की धमकी दी।

जमीनी स्तर पर यूनियन कार्यकर्ताओं द्वारा यूनियन नेताओं को हटाने की कार्रवाइयों की लहर से विभिन्न स्तरों पर यूनियन में कुछ बदलाव और उत्साह आया। यह भी सही है कि कई मामलों में यूनियनों की समग्र नीति में किंचित ही परिवर्तन हुआ क्योंकि नये नेताओं ने जल्द ही अपने को बॉस क्लब में शामिल कर लिया। लेकिन 1970 की दशक के शुरुआत में ट्रेड यूनियन नौकरशाही के विरुद्ध खड़े होने वाले व्यापक आंदोलन ने यूनियन नेतृत्व में एक हद तक बदलाव पैदा किया।

मजदूरों के सबसे सक्रिय हिस्से ने यह महसूस करना शुरू कर दिया था कि ट्रेड यूनियनवादी गतिविधियां अपने आप में अपर्याप्त हैं। शिकागो में जून, 1970 में जमीनी स्तर के यूनियन करने वालों ने अपना पहला सम्मेलन किया जिसमें सभी बड़े उद्योगों के

900 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें एक प्रस्ताव इस आशय का पारित किया गया कि ट्रेड यूनियनों को राजनीतिक तौर पर स्वतंत्र रहना चाहिए। उन्हें किसी भी पूंजीवादी पार्टी-डेमोक्रेटिक या रिपब्लिकन के पक्ष में नहीं होना चाहिए। इसी सम्मेलन ने ट्रेड यूनियन कार्रवाई और जनवाद के लिए राष्ट्रीय समन्वय कमेटी का गठन किया। इसके नारों को काफी जन समर्थन मिला और वे 1976 और 1977 के स्टील मजदूरों की कतारों द्वारा की गयी व्यापक कार्रवाइयों के दौरान काफी लोकप्रिय हुए थे। तब भी, विभिन्न यूनियनों के जमीनी ग्रुप द्वारा की गयी कार्रवाइयां छिटपुट ही रहीं और इनके बीच साझे कार्यक्रम का अभाव बना रहा।

अमेरिकी मजदूरों की पुरानी पीढ़ी 1970 के दशक में याद करती थी कि ऐसा भी समय था जब अधिकांश जुझारू मजदूर संगठन बड़े-बड़े जन प्रदर्शन करते थे, रैलियां निकालते थे और राजधानी वाशिंगटन तक कई-कई हजार लोगों के बड़े विरोध मार्च निकालते थे। यह 1930 के दशक के संकट के समय और द्वितीय विश्व युद्ध के तत्काल बाद की बात है। लेकिन बाद के दशकों में ए. एफ.एल.-सी.आई.ओ. के दक्षिणपंथी सुधारवादी नेतृत्व ने यूनियन आंदोलन से संघर्ष के उन रूपों से लगभग पूर्णतया वंचित कर देने का इंतजाम कर दिया था। लेकिन 1974 में गठित मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के विरुद्ध राष्ट्रीय संश्रय ने पुराने समय के कुछ तरीकों को पुनः अपनाया। इसमें राष्ट्रीय और स्थानीय स्तरों पर यूनियनों के साथ महिलाएं, छात्र, धार्मिक और काले लोगों के संगठन शामिल थे। इसकी पहलकदमी पर 32 शहरों में बड़े प्रदर्शन हुए जिसमें कीमतों में बढ़ोत्तरी को समाप्त करने और बेरोजगारी में कमी लाने की मांग की गयी। 1975 को राष्ट्रीय संश्रय ने राजधानी वाशिंगटन में मार्च निकाला जिसमें 75 हजार लोग शरीक हुए। काले और गोरे, मजदूर और बेरोजगार, यूनियन वाले और कम्युनिस्ट सभी ने साझे परचम के तले साथ साथ मार्च किया।

1968 में ही संयुक्त राज्य अमेरिका की दो बड़ी यूनियनों ने मिलकर एक नया गठबंधन बनाया। यह नयी परिस्थितियों में संगठित मजदूर आंदोलन के साथ तालमेल बना कर चलने की एक कोशिश थी। ये यूनियनें थी यूनाइटेड ऑटो वर्कर्स और टीमस्टर्स यूनियन। इन्होंने मिलकर मजदूर कार्रवाई के लिए संश्रय बनाया था। लेकिन न तो मजदूर कार्रवाई के लिए संश्रय (Alliance for labour action) और न ही कतारों के यूनियन सदस्य ही मजदूर आंदोलन में कोई गुणात्मक तब्दीली ला सके। वे अपनी कतारों के भीतर राजनीतिक निर्भरता और नस्लवादी रुझानों वाले व्यापक तत्वों पर काबू पाने में असमर्थ सिद्ध हुए। यह सच है कि कुशल और अर्धकुशल काले मजदूरों की बढ़ती संख्या ने यूनियनों के भीतर उनकी सदस्यता बढ़ा दी थी। अश्वेतों के आंदोलन के दबाव में 1964 में नागरिक अधिकारों पर अधिनियम पारित हो गया जिसके तहत औपचारिक तौर पर संयंत्रों और यूनियनों में नस्लीय भेदभाव को गैर कानूनी करार दिया गया। इस सबसे यूनियन आंदोलन में काले लोगों की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया। कई मामलों में काले और प्रगतिशील गोरे मजदूर नस्लीय भेदभाव के पूर्वाग्रह से ग्रस्त यूनियन के नेताओं और सदस्यों के विरोध को तोड़ने में समर्थ हुए और विभिन्न स्तरों पर नेतृत्वकारी यूनियन समितियों में काले लोगों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने में समर्थ हुए। कुछ यूनियनों में काले उपाध्यक्ष दिखाई देने लगे। बाद के वर्षों में काले लोगों के बीच से आने वाले यूनियनीकृत मजदूरों का प्रतिशत गोरे लोगों के बीच से आने वाले यूनियनीकृत मजदूरों की तुलना में बढ़ गया था। यह इस तथ्य के बावजूद हुआ कि कुछ यूनियनों में सदस्यों को स्वीकार करने में नस्लीय भेदभाव किया जाता था।

ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. के नेतृत्व की नस्ल के मुद्दे पर नीति के विरुद्ध काले मजदूरों में व्यापक असंतोष ने 1960 में नीग्रो अमेरिकी मजदूर परिषद को जन्म दिया। यूनियन ढांचे के भीतर काम करते हुए परिषद ने नस्लवाद के विरुद्ध लड़ाई में काले मजदूरों की शक्तियों को एकजुट करने में मदद पहुंचायी।

60 के दशक में यूनियनीकृत काले मजदूरों के सघर्ष की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उद्यमों और यूनियनों के भीतर काले कॉकसों (समूहों) का गठन था जिनका उद्देश्य काम के स्थान पर और यूनियन नेतृत्व के साथ सभी संबंधों में पूर्ण समानता हासिल करना था। जैसा कि ऐसे एक ग्रुप के नेतृत्व का कथन है " हम इस संघर्ष में नेतृत्व और सदस्यता दोनों में गोरे लोगों की भागीदारी का स्वागत करते हैं। हमने इसका विरोध कभी नहीं किया। हम कोई काले अलगाववादी ग्रुप नहीं हैं। हम सभी मजदूरों के लिए परिवर्तन चाहते हैं।" (Thomas R.Brooks, "Black upsurge in the unions," Dissent, March-april,1970,P-129 अनुवाद हमारा)

कई संगठन विशेषतौर पर 1972 में गठित काले ट्रेड यूनियनवादियों के गठबंधन (Coalition of Black Trade Unionists) ने यूनियनों के भीतर विभिन्न स्थानीय काले ग्रुपों की गतिविधियों को एकजुट करने और उनके बीच तालमेल बिठाने की कोशिशें की थीं।

गोरे और काले मजदूरों के उद्देश्यों की एकरूपता ने उन्हें संयुक्त कार्रवाई की आवश्यकता की समझदारी दी थी। यह 60 के दशक से बढ़ रही उन हड़तालों से स्पष्ट था जिनमें काम के स्थान पर कालों के प्रति होने वाले भेदभाव के विरुद्ध लड़ाई एक बड़ा मुद्दा थी। इसी प्रकार काले लोगों के नागरिक अधिकार आंदोलन में गोरे लोगों की भागीदारी भी इसका एक लक्षण है।

काले मजदूरों के नागरिक अधिकारों के संघर्ष की सफलता ने और यूनियनों के भीतर उनकी बढ़ती गतिविधियों ने भेदभाव के विरुद्ध आंदोलन के विकास को गति दी। इसके दो उदाहरण हम ऊपर दे चुके हैं। मैक्सिको के प्रवासी मजदूरों ने संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास में 1975 में पहली बार फार्म मजदूरों के संगठन बनाने के अधिकार को किसी राज्य में मान्यता दिलायी थी। इसी के साथ ही सामूहिक सौदेबाजी, हड़ताल और बहिष्कार का अधिकार फार्म मजदूरों को मिला था।

संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी हिस्से में वस्त्र निर्माण में लगे मजदूर अधिकांशतः चिकानो (मैक्सिकी मूल के) हैं। इन्होंने ही इस उद्योग में संगठित होने के अधिकार के लिए संघर्ष किया था। इनका यह अभियान 17 वर्षों तक चला। केवल 1980 के अंत में देश और दुनिया के मजदूरों के दूसरे हिस्सों के समर्थन से संयुक्त राज्य के दक्षिणी हिस्से के वस्त्र निर्माण के मजदूरों को सामूहिक सौदेबाजी का अधिकार मिला था।

नागरिक अधिकार आंदोलन की तमाम सफलताओं के बावजूद बाद में भी संगठित मजदूरों के कई हिस्सों में भेदभाव की गम्भीर बीमारी जारी थी।

अमेरिकी मजदूर आंदोलन का सबसे कमजोर हिस्सा अभी तक उसकी विचारधारात्मक और राजनीतिक दिशा रही है। यूनियन के पदाधिकारियों का घोर कम्युनिज्म-विरोध, जो 1950 के दशक की मैकार्थीवाद की अवस्थिति थी, अभी भी जारी है। यह मजदूर आंदोलन पर पूंजीवादी विचारधारत्मक प्रभाव की सबसे नंगी अभिव्यक्ति है। राजनीतिक क्षेत्र में यह संयुक्त राज्य अमेरिका की दो पूंजीवादी पार्टियों की प्रणाली के परम्परागत खेल के नियमों का अनुसरण करने की ओर यूनियन को ले जाती है। दशकों से यूनियन आंदोलन डेमोक्रेटिक पार्टी का बड़ा वोट बैंक रहा है। डेमोक्रेटिक पार्टी का "महान समाज" का नारा वियतनाम युद्ध के व्यापक हो जाने के बाद ही दफ्न हुआ। 1970 के दशक के अंत से डेमोक्रेटिक पार्टी यूनियन विरोधी मुहिम में हिस्सा ले रही थी।

मजदूर संघर्षों में गिरावट

अगर मोटे तौर पर बात की जाय तो 1975 के आस-पास हड़तालों में गिरावट दर्ज होने लगी थी। इस संदर्भ में रोनाल्ड रीगन के राष्ट्रपति बनने से अमेरिकी पूंजीपति वर्ग को यह संदेश मिल गया था कि अमेरिकी सरकार देश के भीतर से मजदूर आंदोलन के अवशेषों को भी कुचल देना चाहती है। संघीय सरकार ने पेशेवर हवाई ट्रैफिक नियंत्रण संगठन (professional Air Traffic controller Organisation -PATCO) की हड़ताल के मामले में मजदूर विरोधी रवैय्या प्रदर्शित किया। 1960 के दशक के उत्तरार्द्ध में पेशेवर हवाई ट्रैफिक नियंत्रक संगठन ने दूसरी सार्वजनिक क्षेत्र की यूनियनों के साथ हड़ताल संगठित की थी, जबकि उस समय हड़ताल करने का कानूनी अधिकार उनके पास नहीं था। निक्सन के राष्ट्रपतित्वकाल में भी हवाई ट्रैफिक नियंत्रकों ने बीमारी के आधार पर काम पर नहीं जाने का फैसला लिया था जिससे बड़े हवाई अड्डों के ट्रैफिक में अफरातफरी पैदा हो गयी थी। हालांकि इस छिपी हड़ताल में लगभग 3000 नियंत्रक शामिल थे, तब भी निक्सन प्रशासन ने सिर्फ एक हड़ताली नेता को बाहर किया था। उस प्रशासन ने पाट्को के साथ समझौता किया था और दूसरों को काम पर वापस लिया गया था। हवाई ट्रैफिक नियंत्रकों की शिकायतें कार्टर प्रशासन के दौरान बढ़ती गयीं और रीगन प्रशासन के पहले ही साल के दौरान इसका विस्फोट हो गया।

अगस्त, 1981 में पाट्को के सदस्य (PATCO) हड़ताल पर चले गये। इनकी मांग वेतन में बढ़ोत्तरी और काम के सप्ताह को कम करने की थी। हड़ताल शुरू होने के दो दिन बाद ही रीगन प्रशासन ने 11,350 हवाई ट्रैफिक नियंत्रकों को हटा दिया और सेना को हवाई नियंत्रण के काम में लगा दिया। 1920 के दशक के बाद सरकार ने संगठित मजदूरों पर पहली बार सीधे हमला किया था और यूनियन को बदनाम करने में अपनी ताकत झोंक दी थी। रीगन प्रशासन की इस कार्यवाही, कि हड़तालियों को हटाकर दूसरे लोगों को रख लिया जाय, की न्यायसंगतता राष्ट्रीय पैमाने पर हो गयी थी। हालांकि इस प्रक्रिया की शुरुआत 1970 के दशक के अंत में नगरपालिका सरकारों द्वारा की जा चुकी थी। रीगन प्रशासन का यह दांव निजी क्षेत्र ने जल्दी ही अपना लिया। यूनियन नेताओं ने महसूस किया कि हड़तालें अक्सर मालिकों के फायदे में जाकर खत्म होती थीं। हड़तालियों को हटाकर दूसरे लोगों को रखने के दांवपेंच का प्रभाव यह पड़ा कि हड़तालों की संख्या कम होने लगी। 1981 के बाद 1000 या उससे अधिक मजदूरों के शामिल होने वाली हड़तालों की संख्या में गिरावट इस तथ्य से देखी जा सकती है कि जहां 1979 में ऐसी हड़तालों की संख्या 235 थी, वही 1982 में यह गिरकर 96 हो गयी और 1988 में यह और नीचे गिरकर 44 हो गयी।

पाट्को के मजदूरों की पराजय ने निजी पूंजीपतियों के हौंसले बुलंद कर दिये। उन्होंने मजदूरी कम करने और मजदूरों की अन्य सुविधाओं में कटौती करने के प्रयास तेज कर दिये। 1980 के दशक की अधिकांश हड़तालों की मांगें रियायतों से सबन्धित थीं। ए.एफ. एल.-सी.आई.ओ. के नेतागण रियायतों की मांगों को कमतर बुराई समझते थे, अन्यथा मजदूरों को काम से निष्कासन का दण्ड भोगना पड़ता। ऐसा करके ही वे अपनी समझौतापरस्ती को जायज ठहराते थे। मजदूर कतारों के लिए रियायत का मतलब और ज्यादा खतरनाक स्थितियों में काम करना तथा सम्मानजनक जीवन स्तर की आकांक्षा को त्यागना था।

होरमेल फूड कम्पनी द्वारा मजदूरी घटाये जाने के विरुद्ध 1984 में यूनाइटेड फूड और कॉमर्सियल वर्कर्स की हड़ताल भी हड़तालियों को हटाकर नयी भर्ती के कारण असफल हुई। इसी प्रकार 1989 में पिट्टसन कम्पनी के विरुद्ध कोयला खनिकों की हड़ताल रियायतों के लिए संघर्ष तक ही सीमित रह गयी।

1980 के दशक में निजी मालिक हड़तालियों को हटाकर नयी भर्ती करने का दावपेंच अधिकाधिक अपनाने लगे और इस प्रकार मजदूरी घटाने और काम के घण्टे बढ़ाने के मामले में यूनियनों को पीछे धकेल दिया गया। मालिकों द्वारा अपनायी गयी इस नयी कार्यनीति ने हड़तालों को कम प्रभावी कर दिया और यूनियनों द्वारा इसका इस्तेमाल क्रमशः कम होता गया।

1990 के दशक और 21वीं सदी के शुरुआती वर्षों में हड़तालें न्यूनतम स्तर तक पहुंच गयीं। जहां 1990 के दशक में एक हजार या इससे अधिक मजदूरों वाले संस्थानों में हड़तालों की संख्या औसतन 34.7 सालाना रह गयी वहीं 2000 और 2005 के बीच यह घट कर औसतन सालाना 23.6 तक गिर गयी।

विऔद्योगीकीकरण, आउटसोर्सिंग और सस्ते श्रम के लिए निर्मम प्रतिस्पर्धा ने मजदूरों के संघर्ष को और ज्यादा मुश्किल कर दिया। अब नियोक्ता के आधार पर ही लड़ाई मुश्किल होने लगी बल्कि किसी खास क्षेत्र की समूची श्रम शक्ति के आधार पर हड़तालें संगठित करना सफलता के लिए जरूरी होने लगा। इसके लिए आवश्यक यह होने लगा कि मौजूदा यूनियनों की छत्रछाया से बाहर रहने

वाले मजदूरों को भी इनमें शामिल करने के उपाय निकाले जायें। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक तक आते-आते न सिर्फ हड़तालों की संख्या में कमी आने लगी बल्कि यूनियनों की सदस्य संख्या भी कम होने लगी।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि 1980 में रोनाल्ड रीगन के राष्ट्रपति बनने के बाद मजदूर वर्ग के संघर्षों में गिरावट होने लगी थी। इस दौरान मजदूरों की वास्तविक मजदूरी में 15 प्रतिशत की गिरावट आयी। स्वास्थ्य, पेंशन और सामाजिक सुरक्षा खतम होने की ओर गयी। यही वह समय था जब मालिक वर्ग और राज्य ज्यादा हमलावर हुआ। कई स्थानों पर 12 घण्टे कार्य दिवस और सातों दिन काम की योजना थोपी गयी।

इस दौरान जो संघर्ष हुए वे लम्बे समय तक खिंच कर बुरी तरह पराजित हुए। 1981 में पाट्को की पराजय के बाद 1992-95 के दौरान स्टैली के मजदूरों की तीन साल तक चली हड़ताल बुरी तरह विफल रही।

कैटरपिलर के अनुभव

कैटरपिलर कॉरपोरेशन दुनिया की सबसे बड़ी मिट्टी हटाने का उपकरण निर्माता कम्पनी है। इसकी शाखाएं दुनिया भर में फैली हुई हैं। यह समूची दुनिया में वर्ग संघर्ष का केन्द्र रही है। 1987 में स्कॉटलैण्ड में कैटरपिलर के मजदूरों ने 103 दिन तक फैक्टरी पर कब्जा जमा रखा था और 1991 में कनाडा में इसके मजदूरों ने 6 दिनों तक फैक्टरी पर कब्जा कर रखा था। लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका में कैटरपिलर कम्पनी और यूनाइटेड ऑटो वर्कर्स यूनियन ने 1980 के दशक में एक सहयोग करने वाले कार्यक्रम को चला रखा था जिससे कि कम्पनी के अमरीकी संयंत्र ज्यादा प्रतिस्पर्धी हो सकें। जहां मजदूर ज्यादा दक्षता के साथ अधिक उत्पादन कर रहे थे, वहीं कम्पनी समायोजन करके मजदूरों की संख्या तीस प्रतिशत तक कम कर रही थी और गैर यूनियनीकृत नये संयंत्र लगा रही थी।

1991 में कैटरपिलर कम्पनी ने मजदूरी कम करने और काम के घण्टे बढ़ाने तथा मजदूरों को मिलने वाली सुविधाओं में कटौती करने की मांग की। इसके विरुद्ध डेकातूर के कैटरपिलर के मजदूर हड़ताल पर चले गये। पांच महीने बाद कैटरपिलर ने दूसरे मजदूरों को रखने की धमकी दी। इस धमकी के बाद यूनाईटेड ऑटो वर्कर्स के नेतृत्व ने मजदूरों को वापस काम पर जाने का आदेश दे दिया। ढाई साल बाद यूनाइटेड ऑटो वर्कर्स ने अपने सदस्यों को फिर हड़ताल पर जाने को कहा। इस बार कम्पनी ने हड़ताल तोड़कों की मदद से उत्पादन जारी रखने की कोशिश की। 17 महीने की हड़ताल के बाद यूनाइटेड ऑटो वर्कर्स ने कम्पनी के साथ नया समझौता किया जिसका व्यापक मजदूरों ने विरोध किया। तब यूनाइटेड ऑटो वर्कर्स ने हड़ताल को वापस ले लिया और यूनियन सदस्यों को किसी भी तरह काम पर वापस लौटने का आदेश दे दिया। काम पर वापस लौटने के बाद मजदूरों की हालत बहुत अनिष्टकारी को गयी।

कैटरपिलर की इस कहानी के मजदूरों की भयावह पराजय से उपजी तबाही के कुछ प्रमुख वस्तुगत कारण ये हो सकते हैं।

पहला, कॉरपोरेशन वैश्विक हो गयी हैं। वे अपना काम या सुविधायें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की धमकी दे सकती हैं। वे विभिन्न संयंत्रों में काम करने वाले मजदूरों को एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर सकती हैं तथा काम में एक दूसरे के बीच प्रतिस्पर्धा करने को विवश कर सकती हैं। वे श्रम कीमतों मे प्रतिस्पर्धा कराने के लिए भी वैश्विक बाजारों में कार्य करती हैं। यह ऐसा चलन है जिसे मजदूर आंदोलन समाप्त करने की उम्मीद करता है। इसका परिणाम यह होता है कि न्यूनतम तक पहुंचने की दौड़ लग जाती है क्योंकि कॉरपोरेशन सस्ते से सस्ते श्रम के लिए दुनिया भर में दौड़ लगाते हैं।

इस दौरान, मजदूर आंदोलन दुनिया के पैमाने पर बहुत विभाजित है। उदाहरण के लिए जब कैटलपिलर कॉरपोरेशन के स्कॉटलैण्ड और कनाडा के मजदूर फैक्टरी पर कब्जा किये हुए थे उस समय अमेरिकी मजदूरों की बामुश्किल कोई प्रतिक्रिया हुई थी। यूनाइटेड ऑटो वर्कर्स के अधिकांश अमेरिकी मजदूर उनके बारे में शायद जानते भी न रहे हों। संयुक्त राज्य अमेरिका में यूनियन ने विदेश स्थित कैटरपिलर संयंत्रों से प्रतिस्पर्धा में अपने संयंत्रों को ज्यादा दक्ष बनाने की कोशिश की। कैटरपिलर संघर्ष के बहुत बाद में यूनाइटेड ऑटो वर्कर्स ने कैटरपिलर विश्व परिषद में मजदूरों को एक साथ लाने की कोशिश की लेकिन इसका कोई नतीजा नहीं निकला। चूंकि अमेरिकी मजदूरों ने जब उनके संघर्ष में कोई रुचि नहीं दिखायी थी तब स्कॉटलैण्ड व कनाडा के मजदूरों की इनके संघर्ष में क्या रुचि हो सकती थी। इस तरह मजदूरों को श्रम के वैश्विक अलगाव का सामना करना पड़ा।

दूसरा, कॉरपोरशनों ने लचीलेपन की आवश्यकता के तहत अपना पुनर्गठन किया है। वे इसे डाउनसाइजिंग, आउटसोर्सिंग, कम लोगों से उत्पादन और ऐसे ही नामों से पुकारते हैं। इस पुनर्गठन का आमतौर पर मतलब है कि ऊर्ध्वाकार व क्षैतिज तौर पर एकीकृत कॉरपोरेशनों को केन्द्र/परिधि के रूप में परिवर्तित किया जा रहा है। इसका अर्थ है कि कुंजीभूत कार्यभारों के अलावा प्रत्येक कार्य को समाप्त करके सभी कामों को ठेके में अन्य कम्पनियों को दे देना। परिणामस्वरूप एकीकृत कॉरपोरेशन के स्थान पर अनएकीकृत कॉरपोरेशन का गठन। इससे मजदूरों का कोई एक समूह अपने नियोक्ता के समक्ष और भी शक्तिहीन हो जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में ही दर्जनों यूनियनें हैं जो अधिकांश बड़े कॉरपोरेशन से समझौता करती हैं। अधिकांश कम्पनियों में कोई सौदेबाजी की परिषदें नहीं हैं। प्रत्येक कॉरपोरेशन के भीतर इन दर्जनों यूनियनों के बीच शायद ही कोई सम्बन्ध और तालमेल हो। यह भी श्रम का अमेरिकी अलगाव है।

तीसरा, संस्थागत सामूहिक सौदेबाजी के काल के अंत हो जाने से पूंजीपति वर्ग और ज्यादा हमलावर हो गया है। कैटरपिलर के मामले में यह और ज्यादा स्पष्टता के साथ दिखायी पड़ता है। यह संयुक्त राज्य अमेरिका के कॉरपोरेशनों की इस भावना का प्रतिनिधित्व करती है कि यूनियनों से सहयोग के बजाय कार्यस्थल पर उनकी स्वतंत्र ताकत को किसी भी तरीके से समाप्त किया जाय।

कॉरपोरेशनों के यूनियन विरोधी हो जाने की पहचान स्थायी स्थानापन्न मजदूरों के व्यापक इस्तेमाल से होती है। यह 1940 के दशक से श्रम कानूनों के संस्थाबद्ध होने के समय से लेकर 1981 तक संयुक्त राज्य अमेरिका में वस्तुतः अज्ञात रही है। अब कम्पनियां ऐसे मजदूरों से छुटकारा पाने में ज्यादा ताकतवर हो गयी हैं जिन्हें वे पसन्द नहीं करतीं और वे उनको हटा कर नये मजदूरों की भर्ती करने को आजाद हैं।

ऐसे मामलों में नियोक्ता का बुनियादी लक्ष्य एक पक्षीय प्रबन्धन का नियंत्रण है यानी कि मजदूरों का एक स्वतंत्र शक्ति के बतौर खात्मा है। इस लक्ष्य को हासिल करने में कम्पनियों के लिए यूनियनों का खात्मा करना आवश्यक नहीं है। कम्पनियां यूनियनों की लगातार मौजूदगी को तब तक अक्सर स्वीकार किये रहती हैं जब तक वे एक स्वतंत्र शक्ति के बतौर कार्य नहीं करती। यह 1920 के दशक में यूनियनें न बनने देने की कम्पनियों की नीति से अलग है, लेकिन इसके परिणाम वैसे ही हैं।

चौथा, राज्य की बदल रही भूमिका है। इसका एक पहलू सामूहिक सौदेबाजी की संस्थाओं की समाप्ति है, जिनका गठन राष्ट्रीय श्रम सम्बन्ध अधिनियम के तहत किया गया था। इस समय 12 प्रतिशत से भी कम मजदूर यूनियनों में हैं। यह 1936 के बाद से सबसे कम प्रतिशत है। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रत्येक वर्ष यूनियन बनाने के प्रयास में 10,000 मजदूर निकाले जाते हैं। पिछले दो दशकों के दौरान कई हड़तालों में मजदूरों की पिटाई और प्रताड़ना इस बात की ओर भी इशारा करती है कि हड़तालों के प्रति अमेरिकी सरकार का रवैय्या उसी प्रकार का घोर दमनकारी हो गया है जैसा कि उन्नीसवीं सदी में था।

पांचवां, ऐसी स्थिति में भी यूनियनों का वही समझौतावादी रुख बना हुआ है। कैटरपिलर की तरह अन्य कई कम्पनियों में यूनियनें सहयोगी कार्यक्रम सक्रियता से अपनाये हुए हैं। वे यह उम्मीद करती हैं कि इससे संयुक्त राज्य अमेरिका में लोगों के रोजगार सुरक्षित रखे रहेंगी, भले ही उस कम्पनी के अन्यत्र मजदूरों का नुकसान हो। कार्यस्थल पर कम्पनी और उसकी राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति के लिए ऐसा समर्थन इस समूचे काल में संगठित मजदूरों की मुख्य पहचान रही है।

बीसवीं सदी के दो विश्व युद्धों के दौरान अलग-अलग देशों के शासक वर्गों ने एक देश के मजदूरों को दूसरे देश के मजदूरों के खिलाफ सैनिक तौर पर खड़ा कर दिया था। आज मजदूरी को न्यूनतम स्तर पर ले आने की होड़ में एक देश के मजदूरों को दूसरे देश के मजदूरों के विरुद्ध आर्थिक तौर पर खड़ा किया जा रहा है। मजदूर वर्ग के सचेत हिस्से जो इस स्थिति को बदलना चाहते हैं उनके लिए हड़तालें और मजदूर वर्ग के अन्य संघर्ष आने वाले समय में कार्रवाई करने के एक साधन बने रहेंगे।

विगत 25-30 वर्षों के दौरान ए.एफ.एल-सी.आई.ओ. का नेतृत्व अधिकाधिक संयुक्त राज्य अमेरिका के शासक वर्ग के पीछे एकजुट होने की ओर गया है। यूनियनों की सदस्यता लगातार गिरते जाने से यह नेतृत्व चिंतित हो रहा है। लेकिन ए.एफ.एल-सीआई.ओ. नेतृत्व अपनी वर्ग सहयोगी नीति बदलने में असमर्थ रहा है। 2005 में ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. संगठन में फूट पड़ गयी और एक नया संगठन चेंज टू विन यूनियन फेडरेशन (Change To Win Union Federation) अस्तित्व में आया। लेकिन इससे भी ट्रेड यूनियनों के गिरते प्रभाव में कोई फर्क नहीं पड़ा। क्योंकि इनके वर्ग-सहयोगी रवैय्ये में कोई परिवर्तन नहीं आया।

अतीत में हड़तालों और मजदूर वर्ग के अन्य संघर्षों ने काम के घण्टे कम करने और अधिक सुरक्षित माहौल में काम की स्थितियां लाने में भूमिका निभायी थी। इसके साथ ही इनसे मजदूरों की वर्ग चेतना बढ़ी थी। व्यापक कतारों की नेतृत्व क्षमता में विकास हुआ था। उनकी राजनीतिक सक्रियता बढ़ी थी।

लेकिन मजदूर वर्ग की राजनीति करनेवाली एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के अभाव में मजदूर वर्ग खुद अपनी राजनीति से आमतौर पर वंचित रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका का मजदूर वर्ग सुधारवादियों के नेतृत्व में संगठित रहा है। इन सुधारवादियों ने कॉरपोरेशनों के पुनर्गठन के सामने अपनी पुरानी नीतियों में कोई परिवर्तन न करके अपने प्रभाव को और भी कमजोर किया है। यही एक कारण है कि इन फेडरेशनों की सदस्य संख्या में गिरावट आयी है। हड़तालों की संख्या लगातार कम होती गयी है। प्रत्येक वर्ष 20 हजार से ज्यादा यूनियन संविदाओं पर समझौते होते हैं।

मौजूदा समय में यूनियन मान्यता के लिए बामुश्किल कोई हड़ताल करता है। हालांकि 2005-2006 में न्यूयार्क यूनिवर्सिटी अध्यापन सहायकों ने उस समय लम्बे काल तक काम रोक दिया था जब उनकी यूनियन की मान्यता समाप्त कर दी गयी थी। अधिकांश मजदूर प्रतिनिधिक चुनावों या कार्ड चैक के जरिये समझौते का अधिकार पाते हैं। तब वे प्रथम संविदा के लिए समझौता वार्ता करते हैं जिसके तहत 'कोई हड़ताल नहीं' की धारा जुड़ी रहती है। इसका मतलब यह होता है कि संविदा के जीवनकाल के दौरान उन्हें कानूनी तौर पर हड़ताल पर जाने से प्रतिबंधित किया जाता है। ऐसे प्रतिबंधों का 1970 के दशक में दसियों हजार मजदूरों द्वारा खुलेआम उल्लंघन किया जाता था। अब अचानक हड़तालें (wildcat strikes) शायद ही कभी होती हों।

राज्य और न्यायालय सीधे पूंजीपतियों के पक्ष में हैं। न्यायालयों के फैसलों के मुताबिक स्थायी स्थानापन्नों के उपयोग को स्वीकृति मिली हुई है। ऐसी स्थिति में निजी क्षेत्र में ठेके के समझौते के लिए हड़ताल करने पर बहुत कुछ दांव पर लगा होता है। यदि प्रबंधन चाहे तो वह ऐसे हड़तालियों को व्यवहार में निकाल सकता है इस प्रकार हड़ताल के अधिकार को भी बेजान बनाया जा सकता है। सार्वजनिक क्षेत्र में हड़ताल करने पर कानूनी और वित्तीय खतरे मौजूद हैं। राज्य ने कई प्रतिबंध इन पर लगा रखे हैं। दिसम्बर 2005 में न्यूयार्क शहर के ट्रांसपोर्ट वर्कर्स यूनियन के सदस्यों ने जब सब वे में तीन दिनों तक काम को बंद रखा तो उनको असामान्य रूप से भारी जुर्माना अदा करना पड़ा। यह जुर्माना टेलर एक्ट के तहत दिया गया जिसमें यूनियनों और उनके व्यक्तिगत सदस्यों दोनों को जुर्माना अदा करने का प्रावधान था।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है पाट्को की हड़ताल की असफलता के बाद हड़तालों की संख्या में अचानक गिरावट आ गयी। 1980 के दशक में कई बड़ी हड़तालों का अंत बुरी तरह पराजय में हुआ। इन हड़तालों में ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. और इनकी कई केन्द्रीय श्रम परिषदों की भूमिका न के बराबर रही।

1980 के दशक के अंत में कुछ राष्ट्रीय यूनियनों की मदद से कुछ नीचे की कतार समूहों ने मिलकर जॉब्स विथ जस्टिस (jobs with justice) नेटवर्क का गठन किया। जॉब्स विथ जस्टिस के जल्द ही ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. के नेतृत्व के साथ तनावग्रस्त रिश्ते बन गये। लेकिन यह भी उसी रास्ते पर चल रही थी। इसी ने बाद में एक नये फेडरेशन की शक्ल ली जिसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है।

1980 के दशक के दौरान भी कुछ सफल हड़तालों के उदाहरण हैं। 1989 में अपालाचिया के खनिकों और उत्तरपूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका के टेलीफोन मजदूरों की सफल हड़ताल हुई। पिटस्टन के विरुद्ध यूनाइटेड माइन वर्कर्स ऑफ अमेरिका (यू.एम.डब्ल्यू.ए.) ने 12 महीने तक हड़ताल जारी रखी इसने बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां दीं, गैर-पिटस्टन खदानों में यूनियन ने सहानुभूति हड़तालों में मजदूरों को शामिल कराया। यू.एम.डब्ल्यू.ए. ने एकजुटता की स्थानीय संस्कृति को प्रोत्साहित किया तथा उसे समर्थन दिया और सचेत तौर पर हड़ताल को कॉरपोरेट लालच के विरुद्ध जनता के प्रतिरोध आंदोलन में तब्दील किया।

1997 में यूनाइटेड पार्सल सर्विस (यू.पी.एस.) के लगभग 2 लाख मजदूरों ने हड़ताल की थी। यह एक सफल हड़ताल थी। इस हड़ताल का नेतृत्व इण्टरनेशनल ब्रदरहुड ऑफ टीमस्टर्स (आई.बी.टी.) ने किया था। इसका मकसद पूरावक्ती नौकरियों के लिए लड़ना था। यू.पी.एस. में अधिकांश मजदूर अंशकालिक थे। आई.बी.टी. ने नारा दिया "अंशकालिक अमेरिका काम नहीं करता!" इसने अपनी लड़ाई को सार्वजनिक स्वरूप दे दिया। आई.बी.टी. के ड्राइवर प्रचार करते थे कि वे अमेरिका के प्रत्येक मजदूर की लड़ाई लड़ रहे हैं। आई.बी.टी. के इस प्रचार का असर अन्य मजदूरों पर पड़ा और यह लड़ाई जीती गयी।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि इस कठिन समय में भी कुछ बड़ी लड़ाइयां मजदूरों ने तभी जीती हैं जब उन्होंने अपने सक्रिय समर्थन का आधार बाकी गैर संघर्षरत मजदूरों तक विस्तृत कर लिया। इसके साथ ही उन्होंने संघर्ष के ऐसे मुद्दे लिए जिनमें बाकी मजदूरों की सक्रिय सहानुभूति और समर्थन मिलता था। इसके अतिरिक्त हड़ताल करने या कार्य पर रहकर संघर्ष करने के उचित समय का चुनाव महत्वपूर्ण पहलू है। हड़ताल के दौरान हड़ताली परिवारों के जीवन-बसर और हड़ताल को आगे बढ़ाने के लिए कोष एक महत्वपूर्ण पक्ष है। बीसवीं सदी के अंत से अभी तक वे ही लड़ाइयां जीती गयी हैं जो उपरोक्त पहलुओं को ध्यान में रखकर तैयारी के साथ लड़ी गयी थीं।

विसकोंसिन से सबक

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. और उससे अलग हुई फेडरेशन चेंज टू विन की समझौतापरस्ती और वर्ग सहयोगी दिशा ने मजदूर आंदोलन को कमजोर कर दिया। इसी समझौतापरस्ती की दिशा में टीमस्टर यूनियन, यूनाइटेड ऑटो वर्कर्स यूनियन और यूनाइट-हियर (Union Of Needle, Industrial and Textile Employees- Hotel Employees and Restaurent Employees-UNITE-HERE) आगे बढ़ गयीं।

लेकिन अफगानिस्तान-इराक युद्ध के समय से युद्ध के विरोध में मजदूर वर्ग भारी तादाद में शामिल होने लगा। 15 फरवरी 2003 को समूची दुनिया में इराक पर अमेरीकी हमले के विरुद्ध प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में संयुक्त राज्य अमेरिका के मजदूर भी शामिल हुए। मजदूरों में इस अन्यायपूर्ण युद्ध के विरोध में गुस्से को देखते हुए इन वर्ग सहयोगी यूनियनों को भी इसके विरोध में आवाज उठानी पड़ी।

संयुक्त राज्य अमेरिका में 2007 से शुरू हुआ आर्थिक संकट जहां एक तरफ अमेरीकी राज्य को बैंकों को उबारने के लिए अरबों डॉलर का सार्वजनिक कोष उनके लिए खोलने की ओर ले गया तो दूसरी ओर संयुक्त राज्य अमेरिका के विभिन्न राज्यों में मजदूर वर्ग और अन्य मेहनतकश हिस्सों पर चौतरफा हमले तेज हो गये।

2011 में विसकोंसिन राज्य के गवर्नर ने सार्वजनिक क्षेत्र के मजदूरों पर हमला बोल कर उनके सामूहिक सौदेबाजी के अधिकार को छीनने वाले कानून को वहां की विधानसभा के सामने पेश किया। इस मजदूर-विरोधी कानून के विरोध में समूचे राज्य के मजदूरों, छात्रों, अध्यापकों और अन्य नागरिक समूहों में गुस्से की लहर उठ पड़ी। इस कानून के विरोध में मजदूरों और छात्रों ने वहां की विधानसभा इमारत पर कई सप्ताह तक कब्जा जमाये रखा। लाखों की तादाद में प्रदर्शनकारी विधानसभा की इमारत के सामने 'बिल को समाप्त करो' के नारे लगाते डटे थे। समूचे संयुक्त राज्य अमेरिका से विसकोंसिन के संघर्ष के समर्थन में ट्रेड यूनियनें, छात्र संगठन, युद्ध विरोधी संगठन, अफ्रीकी-अमेरिकी लोगों के संगठन तथा अन्य समूह आने लगे। यह संघर्ष पूंजी और श्रम के संघर्ष का उस समय केन्द्र बन गया।

विसकोंसिन का यह संघर्ष जून, 2011 तक चला। इस दौरान संघर्ष के विभिन्न रूप अपनाये गये। लेकिन इस संघर्ष को कानूनी तौर पर बड़ा धक्का उस समय लगा जब राज्य के उच्च न्यायालय ने विधानसभा द्वारा पारित इस यूनियन-विरोधी कानून को सही ठहरा दिया और काउण्टी न्यायालय द्वारा इसे गैर कानूनी घोषित करने के फैसले को उलट दिया।

लेकिन यह सवाल महज केवल कानूनी फैसले का नहीं था। व्यापक मजदूरों और इस संघर्ष को आगे बढ़ाने वाले यूनियन कार्यकर्ताओं, जुझारू छात्रों-नौजवानों और उत्पीड़ित समुदायों के नेताओं के समक्ष सवाल और बड़ा था।

क्या पूंजीवादी न्यायालय के जजों के एक छोटे समूह द्वारा दिया गया फैसला लाखों-लाख मजदूरों के संघर्ष और कुर्बानी को किनारे लगा सकता है? क्या 14 फरवरी से शुरू हुआ लाखों-लाख लोगों का आंदोलन और विधानसभा की इमारत पर कब्जा व्यर्थ चला गया?

इस दमनकारी कानून ने सार्वजनिक क्षेत्र के मजदूरों के सामूहिक सौदेबाजी के अधिकार को समाप्त कर दिया। इस कानून के तहत बजट प्रावधानों में 80 करोड़ डॉलर की राशि में कटौती करके शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य मदों में पैसा कम कर दिया गया। जबकि करों में कमी और ठेकों से पूंजीपतियों को करोड़ों डॉलर देने का इंतजाम किया गया।

चार महीनों तक विसकोंसिन के मजदूरों की गोलबंदी बेमिसाल रही। ऐसी ताकत और संगठन की निरंतर चलने वाली कार्रवाई दशकों से नहीं देखी गयी थी। इसने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर एकजुटता पैदा करने की प्रेरणा दी और यूनियनों के लिए व्यापक समर्थन जुटाया।

18 दिनों तक राज्य विधानसभा की इमारत पर कब्जा 12 मार्च को अपनी बुलंदी पर उस समय पहुंच गया था जब राजधानी मैडीसन की विधानसभा इमारत को तकरीबन 1 लाख 85 हजार लोगों ने घेर लिया था।

लाखों-लाख संघर्षशील लोगों पर यूनियन विरोधी अलोकप्रिय कानून कैसे थोपा जा सकता है?

यह ऐसा सवाल है जिसका जवाब हर संघर्षशील मजदूर व छात्र को खोजना ही होगा?

इसका सही जवाब तो यही हो सकता है कि विसकोंसिन की लड़ाई व्यर्थ नहीं गयी। इस संघर्ष का अभी एक ही अध्याय समाप्त हुआ है। लेकिन पूंजीपति वर्ग और उसके राज्य के हमले जारी हैं। इसलिए संघर्ष के अवसर मौजूद हैं और मजदूर वर्ग नयी ताकत व संगठन के साथ इसे फिर से शुरू करने की सम्भावना लिए हुए है।

यदि यह संघर्ष जन प्रदर्शनों के राजनीतिक दबाव डालने के रूप से सीधे वर्ग-संघर्ष के रूप की ओर बढ़ा होता तो या तो सरकार, मालिक और बैंकपति पीछे हट गये होते या इसकी कीमत उनको महंगी पड़ती। यहां यह ध्यान देने की बात है कि आम हड़ताल करने के प्रस्ताव आने लगे थे। विसकोंसिन में आम हड़ताल से समूचे देश के मजदूर आंदोलन में आलोड़न पैदा होने की सम्भावना थी। यह कई वर्षों में पहली बार था कि आम हड़ताल के वस्तुगत हालात शक्ल ले रहे थे और एक लेबर फेडरेशन ने वस्तुतः इसकी हिमायत की थी।

26 फरवरी तक प्रदर्शनकारियों की संख्या डेढ़ लाख तक पहुंच गयी थी। संयुक्त राज्य अमेरिका के सभी 50 राज्यों में एकजुटता प्रदर्शन हो चुके थे।

गवर्नर वाकर ने 11 मार्च को गैर कानूनी संसदीय तिकड़मबाजियों का सहारा लेकर इस कानून को पारित करा लिया और उसमें हस्ताक्षर करके उसे कानून का रूप दे दिया। अगले ही दिन प्रदर्शनकारियों की संख्या लगभग एक लाख 85 हजार पहुंच गयी थी।

संघर्ष को आगे बढ़ाने का रास्ता आम हड़ताल की ओर जाता था। लेकिन विसकोंसिन का मजदूर नेतृत्व आम हड़ताल के बारे में चुप्पी साधे हुए था। वह अपना सारा ध्यान न्यायालय के फैसले पर केन्द्रित किये हुए था।

आम हड़ताल के आह्वान के बारे में समूचा बोझ चंद नेतृत्वकारी मजदूर नेताओं पर डालना गलत था। विसकोंसिन राज्य के मजदूर नेता भी समझौतापरस्त थे और वर्ग सहयोगी फेडरेशनों से सम्बद्ध थे। यदि ऐसे निर्णय राज्य और स्थानीय नेताओं के साथ मिलकर होते क्योंकि उन्हें ही पता था कि वे समूचे शासक वर्ग को चुनौती दे रहे हैं। तब वे सही आकलन कर सकते थे। फेडरेशनों के राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा ऐसी आम हड़ताल का खुला समर्थन व सहयोग होना चाहिए था। लेकिन ए.एफ.एल.-सी.आई.ओ. के अध्यक्ष जब रैलियों को सम्बोधित कर भी रहे थे, तब भी उन्होंने एक बार भी वर्ग-संघर्ष को आगे बढ़ाने की दिशा में कुछ नहीं कहा।

मजदूर यहां पूंजीवादी राज्य द्वारा उसके विरुद्ध किसी बड़ी लड़ाई में नहीं पराजित हुए। उनको इस लड़ाई में धक्का इसलिए लगा क्योंकि मजदूर नेता मजदूरों द्वारा प्रदर्शित शक्ति, ऊर्जा और दृढ़निश्चय का इस्तेमाल नहीं कर सके जिससे कि पूंजीवादी "कानूनियत" के झूठे दावों से पार पाया जा सके। इसके बजाय वे पूंजीवादी कानून के सामने नतमस्तक हो गये।

कहने का मतलब यह नहीं है कि मजदूर वर्ग को कानून का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए या विधायकों को वापस बुलाने की मांग नहीं करनी चाहिए। कहने का मतलब स्पष्ट है कि इन तरीकों पर पूर्णतया निर्भर नहीं होना चाहिए। संसदीय व न्याय पाने के न्यायालयी तरीके पूंजीपति वर्ग और उसके राज्य के विरुद्ध संघर्ष में गौण स्थान रखने चाहिए। केवल पूंजीपति वर्ग और उनके राज्य की वर्गीय ताकत को वर्ग संघर्ष ही चुनौती दे सकता है और मजदूर वर्ग को विजय की ओर ले जा सकता है।

यह रास्ता मजदूर फेडरेशनों के वर्ग-सहयोगी दिशा के विरुद्ध व्यापक कतारों को वर्ग-संघर्ष की दिशा में खड़ा करके ही निकाला जा सकता है।

विसकोंसिन के चार महीने के व्यापक संघर्ष का यही सबक है।

लेकिन ये सारी लड़ाइयां ट्रेड यूनियन के दायरे की हैं। जहां दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में मजदूरों की हड़तालें सिर्फ आर्थिक मुद्दों तक सीमित न होकर राजनीतिक हड़तालों व आम हड़तालों का स्वरूप ग्रहण करने की ओर गयी हैं, वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका में राजनीतिक हड़ताल या आम हड़ताल परिदृश्य से लगभग नदारद रही है।

यह वही संयुक्त राज्य अमेरिका है जहां अतीत में मजदूर वर्ग के संघर्ष की शानदार परम्परा रही है। जहां के इतिहास में हड़ताल की लहरों का सिलसिला रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका के मजदूर वर्ग ने हड़तालों को तोड़ने के मालिक वर्ग के हिंसक प्रयासों का

मुंहतोड़ जवाब दिया था। उसने व्यापक संघर्षों की बदौलत यूनियन बनाने के अधिकार हासिल किये थे। उसने हड़ताल करने व यूनियन बनाने के लिए बेमिसाल कुर्बानियां दी थीं।

आज अमेरिकी राज्य और कॉरपोरेशनों ने इन अधिकारों पर हमला बोल दिया है। अतीत की विजयों से हासिल उपलब्धियों को वह छीन लेने पर आमादा हैं। अतीत के संघर्षों की बदौलत वहां के अफ्रीकी-अमेरिकियों, लैटिन लोगों को यूनियनों में शामिल होने और उनके बिना किसी भेदभाव के पदाधिकारी बनने के अधिकार मिले हुए हैं। महिला मजदूरों की शानदार लड़ाइयों की बदौलत उन्हें यूनियनों में शामिल होने और जीवन के हर क्षेत्र में समानता के अधिकार हासिल हुए हैं।

यह मजदूर वर्ग के नेतृत्व की तमाम समझौतापरस्ती और गद्दारी के बावजूद हासिल हुआ है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्क्स के समय से ही मार्क्सवादी विचारों के आधार पर मजदूर आंदोलन के गठित करने के प्रयासों के बावजूद कभी भी व्यापक मजदूर आबादी पर कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव नहीं रहा है। यह उस समय भी नहीं रहा है जब कम्युनिस्ट पार्टी संशोधनवादी नहीं थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अर्ल ब्राउडर की वर्ग सहयोगी दिशा ने तो वहां के कम्युनिस्ट आंदोलन को गम्भीर क्षति पहुंचायी। मजदूर आंदोलन के भीतर उसके प्रभाव को अत्यधिक कमजोर किया। बाद में ख्रुश्चेवी संशोधनवाद के आ जाने के बाद वहां की कम्युनिस्ट पार्टी खुलेआम संशोधनवादी पार्टी में तब्दील हो गयी। इसने वहां के मजदूर आंदोलन को पूंजीवादी दायरे में सीमित रखने में और योगदान किया।

एक तरफ द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिकी साम्राज्यवाद की ताकत में बेशुमार वृद्धि हुई और उसे कुछ पूंजीवादी प्रचारक प्रचुरता वाला समाज कहने लगे। इससे मजदूर वर्ग के एक हिस्से में भी अमरीकी विशिष्टतावाद का पूंजीवादी विचार गहराई से घर कर गया। अमेरिकी मजदूरों के अभिजात हिस्से में अमरीकी विशिष्टतावाद का पूंजीवादी विचार उन्हें अफ्रीकी-अमेरिकी और लैटिन मजदूरों से अलग-थलग रखता था। ये अभिजात मजदूर वियतनाम में अमेरिकी आक्रमण का समर्थन करते थे और खुद अमेरिका के अंदर नागरिक अधिकार आंदोलन का विरोध करते थे।

इन वस्तुगत और आत्मगत कारकों की वजह से संयुक्त राज्य अमेरिका का मजदूर आंदोलन अपनी तमाम कुर्बानियों के बावजूद, अपने शानदार संघर्षों के बावजूद पूंजीवादी दायरे में सीमित रहा। बाद के दिनों में जब से रोनाल्ड रीगन सत्ता में आया तब से अमेरिकी राज्य ने एक के बाद दूसरे मजदूर वर्ग के अधिकारों पर हमले बोल दिये। इन हमलों से स्थापित ट्रेड यूनियनें भी कमजोर हुईं।

2007 से शुरू होने वाले आर्थिक संकट का बोझ संयुक्त राज्य अमेरिका का शासक वर्ग वहां के मजदूर वर्ग पर लगातार डालता रहा है। राष्ट्रीय आय में मजदूरी का हिस्सा पूंजी के सापेक्ष लगातार गिर रहा है। ऐसी हालत में, वर्ग संघर्ष का तीखा होना लाजिमी है। जहां कभी वर्ग राजनीति से पलायन की चर्चा होती थी वहां अब वर्ग की वापसी चर्चा का विषय बन गया है।

आज जब वैश्विक पैमाने पर मजदूर वर्ग फिर से अंगड़ाई ले रहा है। उस समय अमेरिकी मजदूर वर्ग अपने को तैयार करने की ओर बढ़ेगा। मजदूर वर्ग का संघर्ष लगातार जारी है। यह किसी की इच्छा की बात नहीं है। यह वस्तुगत तौर पर चल रहा है।

विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के साथ-साथ अमेरिकी साम्राज्यवाद भी चौतरफा संकटों से घिरा हुआ है। पूंजीवादी दायरे में इस संकट का कोई बुनियादी समाधान नहीं है। अमेरिकी साम्राज्यवादी इसे अपने देश के मजदूर वर्ग के अलावा दूसरे देशों पर भी डाल रहे हैं। वे दुनिया को युद्धों में झोंक कर अपने संकट को टालने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अमेरिकी साम्राज्यवाद के संकट से उबरने के कोई आसार नहीं हैं।

सिर्फ संयुक्त राज्य अमेरिका का मजदूर वर्ग ही अमेरिकी समाज को संकट से निजात दिला सकता है। वह अमेरिकी पूंजीवाद की कब्र खोदकर उसे दफनाकर ही उससे निजात दिला सकता है।

इसके लिए वहां मौजूद विभिन्न मार्क्सवाद-लेनिनवादी समूहों को एक सही कार्यक्रम के आधार पर अखिल अमेरिकी कम्युनिस्ट पार्टी को गठित करने तथा उसे मजदूर वर्ग के बीच केन्द्रित करने की ओर बढ़ना होगा। अतीत के मजदूर आंदोलन के समाहार के आधार पर आज व्यापक क्रांतिकारी मजदूर आंदोलन संगठित करना होगा।

संक्षेप में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के संयुक्त राज्य अमेरिका के मजदूर आंदोलन के ऐसे ही सबक हैं।

■■■